सान्ध्य चिन्ता

क्षीणकर अवशिष्ट तनुवसु, वदनचित्त मलीन।

दीर्घ यात्रा श्रान्त सा फिर सारथी उरु हीन।

देख जग वैविध्य सुख दुख, कामना के दंश।

धाम गमनातुर हुआ ज्यों, गगन पथ से हंस ।।1।।

रहा अविजित तम नहीं यह विफलता या हार।

नही उद्यम श्रृंखला श्रम हो गए निःसार।

श्लाघ्य आभा प्रसारण में स्वमतिबल विनियोग।

अधमतम नर कृत्य तम विस्तार में सहयोग ।।2।।

रोक क्या पाया तिमिर का दुरतिक्रम कुप्रसार।

कर सका कालार्द्ध तक रवि भी सफल प्रतिकार।

सहज भास्वरता तुम्हारी है कहां अपनेय।

प्रकृति का शासन प्रकृति तक ज्ञातृ तुम वह ज्ञेय ।।3।।

हैं सदा निष्फल समुद्यम लक्ष्य यदि निस्सार।

हारता है वह गया जो कामना से हार।

है वही दुष्कर्म जनता अन्ततः भय शोक।

और वह सत्कर्म भरता चित्त में आलोक ।।4।।

हारते है वे नियामक जो समझ निज को।

गगन का अधिपति समझते भूल से द्विज को।

देखते जो स्वप्न स्वर्णिम उन्ही को नैराश्य।

जगत हरि के, जीव के संकल्प का है भाष्य ।।5।।

विश्व की आयोजना में मात्र लघु नर योग।

विज्ञ ऐसा जान कर करता स्वबल विनियोग।

डालकर यज्ञाग्नि में सुरभित सुकर्म हविष्य।

है सदा सन्तुष्ट विस्मृत विगत और भविष्य ।।6।।

शिव कुमार मिश्र

कानपुर

25:02:2025